कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(27जुलाई -31 जुलाई, 2019)

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी   दिनांक 26.07.2019

अरेराज प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं–कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मो ं के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2–3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500–600 लीटर पानी मे घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत मे ं एक से0मी0 पानी की उपस्थति रहनी चाहिए।
अरहर		उचॉस जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करे। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय–13, राजेन्द्र अरहर–1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशसित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से0मी0 रखें । बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखे ं।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या

		इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर / 2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे–भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रुप से कीट–व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों मे गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च–3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0–267 अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150–200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ–23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैंडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ–1 अनुषंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ–3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग–अलग समय में पकने वाली आम की किस्मो ं का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह मे पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह मे ं पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त मे पकने वाली किस्मे ं समरबहिश्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष ंकर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगडा़ राजेंद्र आम–1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधो ं को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे– कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट ब ेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे– कसैलिया, लौंगिया, र्स्वणरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि है ं। उपजाऊ मिट्टी मे ं 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़ े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़कने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रुप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयाार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज

		मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

9473000861

head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(27जुलाई -31 जुलाई, 2019)

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी — दिनांक 26.07.2019

बंजरिया प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं–कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मो के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम

		जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2–3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500–600 लीटर पानी मे घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत मे ं एक से0मी0 पानी की उपस्थति रहनी चाहिए।
अरहर		उचाँस जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करे। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय–13, राजेन्द्र अरहर–1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशसित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से0मी0 रखें । बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखे ं।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उचाँस जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे–भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रुप से कीट–व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों मे गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च–3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0–267 अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150–200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ–23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ–1 अनुषंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ–3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग–अलग समय में पकने वाली आम की किस्मो ं का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह मे पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफाँन्जों, जड़दालू, जून माह मे ं पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त मे पकने वाली किस्मे ं समरबहिश्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष ंकर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगडा़ राजेंद्र आम–1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधो ं को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे– कसवा, सबौर वेदाना, चाइना तथा लेट ब ेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे– कसैलिया, लौंगिया, र्स्वणरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि है ं। उपजाऊ मिट्टी मे ं 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़ े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़कने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रुप से निगरानी करते रहें।

चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गोशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(27जुलाई -31जुलाई, 2019)

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी   दिनांक 26.07.2019

ढाका प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।

- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं–कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मो के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2–3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500–600 लीटर पानी मे घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत मे एक से0मी0 पानी की उपस्थति रहनी चाहिए।
अरहर		उचॉस जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करे। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय–13, राजेन्द्र अरहर–1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशसित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से0मी0 रखें । बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखे।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे–भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रुप से कीट–व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों मे गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च–3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0–267 अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150–200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ–23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ–1 अनुषंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ–3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग–अलग समय में पकने वाली आम की किस्मो का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह मे पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह मे पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन

		दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त मे पकने वाली किस्मे समरबहिश्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष कर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम–1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधो को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे– कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट ब`दाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे– कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि है। उपजाऊ मिट्टी मे 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़` 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़कने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रुप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गोशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

9473000861

head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र

पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)

डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(27 जुलाई -31 जुलाई, 2019)

रेफरेस 14 /AAS/ पिपराकोठी 　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　दिनांक 26.07.2019

केसरिया प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं–कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मो ं के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2–3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500–600 लीटर पानी मे घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत मे ं एक से0मी0 पानी की उपस्थति रहनी चाहिए।
अरहर		उचॉस जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करे। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय–13, राजेन्द्र अरहर–1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशसित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से0मी0 रखें । बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखे ं।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे–भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रुप से कीट–व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों मे गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च–3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0–267 अनुंशसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150–200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ–23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा,

		बसराई, फिआ–1 अनुषंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ–3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग–अलग समय में पकने वाली आम की किस्मो ं का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह मे पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह मे ं पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त मे पकने वाली किस्मे ं समरबहिश्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष ंकर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम–1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधो ं को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे– कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट ब`दाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे– कसैलिया, लौंगिया, स्र्वणरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि है ं। उपजाऊ मिट्टी मे ं 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़` 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़कने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रुप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान	**नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)**
9473000861	***9368411887***
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in	gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(27 जुलाई -31 जुलाई, 2019)

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी दिनांक 26 .07.2019

कोटवा प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं–कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मघ्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मो ं के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2–3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500–600 लीटर पानी मे घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत मे ं एक से0मी0 पानी की उपस्थति रहनी चाहिए।
अरहर		उचॉस जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करे। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय–13, राजेन्द्र अरहर–1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशसित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से0मी0 रखें । बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखे ं।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे–भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रुप से कीट–व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों मे गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च–3, कृष्णा, अर्का

		लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0–267 अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150–200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ–23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ–1 अनुषंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ–3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग–अलग समय में पकने वाली आम की किस्मो ं का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह मे पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह मे ं पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त मे पकने वाली किस्मे ं समरबहिश्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष ंकर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम–1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधो ं को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे– कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट ब`दाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे– कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि है ं। उपजाऊ मिट्टी मे ं 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़` 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़कने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रुप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

9473000861

head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(27जुलाई -31 जुलाई, 2019)

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी   दिनांक 26.07.2019

पहाड़पुर, प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं–कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मो ं के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2–3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500–600 लीटर पानी मे घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत मे ं एक से0मी0 पानी की उपस्थति रहनी चाहिए।
अरहर		उचॉस जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करे। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय–13, राजेन्द्र अरहर–1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशसित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से0मी0 रखें । बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखे ं।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या

		इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे–भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रुप से कीट–व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों मे गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च–3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0–267 अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150–200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ–23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ–1 अनुषंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ–3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग–अलग समय में पकने वाली आम की किस्मो ं का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह मे पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह मे ं पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त मे पकने वाली किस्मे ं समरबहिश्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष ंकर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगडा़ राजेंद्र आम–1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधो ं को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे– कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट ब ेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे– कसैलिया, लौंगिया, र्स्वणरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि है ं। उपजाऊ मिट्टी मे ं 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़ े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़कने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रुप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयाार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(27जुलाई -31 जुलाई, 2019)

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी   दिनांक 26.07.2019

पिपराकोठी प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

- ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–
- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं–कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मो के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2–3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के

		अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500–600 लीटर पानी मे घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत मे ं एक से0मी0 पानी की उपस्थति रहनी चाहिए।
अरहर		उचॉस जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करे। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय–13, राजेन्द्र अरहर–1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशसित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से0मी0 रखें । बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखे ं।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे–भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रुप से कीट–व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों मे गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च–3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0–267 अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150–200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ–23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ–1 अनुषंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ–3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग–अलग समय में पकने वाली आम की किस्मो ं का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह मे पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह मे ं पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त मे पकने वाली किस्मे ं समरबहिश्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष ंकर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगडा़ राजेंद्र आम–1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधो ं को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे– कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट ब`दाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे– कसैलिया, लौंगिया, स्र्वणरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि है ं। उपजाऊ मिट्टी मे ं 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़` 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़कने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रुप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।

फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गोशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(27 जुलाई -31 जुलाई, 2019)

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी — दिनांक 26.07.2019

चिरैया प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं–कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मो ं के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2–3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500–600 लीटर पानी मे घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत मे ं एक से0मी0 पानी की उपस्थति रहनी चाहिए।
अरहर		उचॉस जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करे। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय–13, राजेन्द्र अरहर–1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशसित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से0मी0 रखें । बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखे ं।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे–भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रुप से कीट–व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों मे गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च–3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0–267 अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150–200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ–23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ–1 अनुषंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ–3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग–अलग समय में पकने वाली आम की किस्मो ं का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह मे पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह मे ं पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त मे पकने वाली किस्मे ं समरबहिश्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष ंकर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम–1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधो ं को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे– कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट ब`दाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे– कसैलिया, लौंगिया, र्स्वणरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि है ं। उपजाऊ मिट्टी मे ं 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।

खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़` 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़कने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रुप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गोशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान	नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9473000861	***9368411887***
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in	gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(27जुलाई -31 जुलाई, 2019)

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी — दिनांक 26.07.2019

मधुबन प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।

- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं–कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का बिचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मो ं के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2–3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500–600 लीटर पानी मे घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत मे ं एक से0मी0 पानी की उपस्थति रहनी चाहिए।
अरहर		उचॅास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करे। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय–13, राजेन्द्र अरहर–1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशसित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से0मी0 रखें । बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखे ं।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उचॅास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे–भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रुप से कीट–व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों मे गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च–3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0–267 अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150–200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ–23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ–1 अनुषंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ–3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग–अलग समय में पकने वाली आम की किस्मो ं का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह मे पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह मे ं पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त मे पकने वाली किस्मे ं समरबहिश्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष ंकर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगडा़ राजेंद्र आम–1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण,

		मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधो ं को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे– कसवा, सबौर वेदाना, चाइना तथा लेट ब`दाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे– कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि है ं। उपजाऊ मिट्टी मे ं 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़` 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़कने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रुप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफाँस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र

पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)

डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(27जुलाई -31 जुलाई, 2019)

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी दिनांक 26.07.2019

चकिया प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं–कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मो ं के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2–3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500–600 लीटर पानी मे घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत मे ं एक से0मी0 पानी की उपस्थति रहनी चाहिए।
अरहर		उचॉस जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करे। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय–13, राजेन्द्र अरहर–1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशसित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से0मी0 रखें । बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखे ं।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे–भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रुप से कीट–व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों मे गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च–3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0–267 अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150–200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ–23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ–1 अनुषंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ–3 तथा

		सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग–अलग समय में पकने वाली आम की किस्मो ं का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह मे पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह मे ं पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त मे पकने वाली किस्मे ं समरबहिश्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष ंकर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगडा़ राजेंद्र आम–1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधो ं को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे– कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट ब`दाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे– कसैलिया, लौंगिया, र्स्वणरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि है ं। उपजाऊ मिट्टी मे ं 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़` 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़कने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रुप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान	नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9473000861	***9368411887***
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in	gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(27जुलाई -31 जुलाई, 2019)

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 26.07.2019

छौरादाना प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं–कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मो ं के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2–3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500–600 लीटर पानी मे घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत मे ं एक से0मी0 पानी की उपस्थति रहनी चाहिए।
अरहर		उचॉस जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करे। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय–13, राजेन्द्र अरहर–1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशसित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से0मी0 रखें । बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखे ं।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या

		इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उचॅास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे–भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रुप से कीट–व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों मे गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च–3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0–267 अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150–200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ–23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैंडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ–1 अनुषंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ–3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग–अलग समय में पकने वाली आम की किस्मो ं का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह मे पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह मे ं पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त मे पकने वाली किस्मे ं समरबहिश्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष ंकर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगडा़ राजेंद्र आम–1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधो ं को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे– कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट ब`दाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे– कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि है ं। उपजाऊ मिट्टी मे ं 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़` 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़कने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रुप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयाार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान ***9473000861*** head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in	नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम) ***9368411887*** gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(27जुलाई -31 जुलाई, 2019)

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी दिनांक 26.07.2019

अदापुर, प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं–कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मो के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2–3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500–600 लीटर पानी मे घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत मे एक से0मी0 पानी की उपस्थति रहनी चाहिए।
अरहर		उचॉस जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो

		फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करे। बहार, पूसा 9, नरेंद्र अरहर 1, मालवीय–13, राजेन्द्र अरहर–1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशसित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से0मी0 रखें । बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखे ं।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे–भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रुप से कीट–व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों मे गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च–3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0–267 अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150–200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ–23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैंडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ–1 अनुषंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ–3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग–अलग समय में पकने वाली आम की किस्मो ं का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह मे पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह मे ं पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त मे पकने वाली किस्मे ं समरबहिश्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष ंकर, आम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगडा़ राजेंद्र आम–1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधो ं को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे– कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट ब`दाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे– कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि है ं। उपजाऊ मिट्टी मे ं 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़` 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़कने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रुप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं

		को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

9473000861

head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र

पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)

डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(27जुलाई -31जुलाई, 2019)

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी — दिनांक 26.07.2019

पिपराकोठी प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं–कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मो के लिए 30

		किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2–3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500–600 लीटर पानी मे घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत मे ं एक से0मी0 पानी की उपस्थति रहनी चाहिए।
अरहर		उचॉस जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करे। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय–13, राजेन्द्र अरहर–1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशसित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से0मी0 रखें । बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखे ं।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे–भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रुप से कीट–व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों मे गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च–3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0–267 अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150–200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ–23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ–1 अनुषंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ–3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग–अलग समय में पकने वाली आम की किस्मो ं का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह मे पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह मे ं पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त मे पकने वाली किस्मे ं समरबहिश्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष ंकर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगडा़ राजेंद्र आम–1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधो ं को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे– कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट ब`दाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे– कसैलिया, लौंगिया, स्र्वणरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि है ं। उपजाऊ मिट्टी मे ं 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़` 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़कने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रुप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं

		के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयाार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गोशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

9473000861

head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(27जुलाई -31 जुलाई, 2019)

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी दिनांक 26.07.2019

कल्याणपुर प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।

- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं–कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मघ्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मो ं के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2–3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500–600 लीटर पानी मे घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत मे ं एक से0मी0 पानी की उपस्थति रहनी चाहिए।
अरहर		उचॉस जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करे। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय–13, राजेन्द्र अरहर–1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशसित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से0मी0 रखें । बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखे ं।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे–भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रुप से कीट–व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों मे गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च–3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0–267 अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150–200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ–23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ–1 अनुषंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ–3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग–अलग समय में पकने वाली आम की किस्मो ं का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह मे पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह मे ं पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त मे पकने वाली किस्मे ं समरबहिश्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष ंकर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगडा़ राजेंद्र आम–1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधो ं को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।

लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे– कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट ब`दाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे– कसैलिया, लौंगिया, र्स्वणरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि है ं। उपजाऊ मिट्टी मे ं 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़` 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़कने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रुप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(27 जुलाई -31 जुलाई, 2019)

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 26.07.2019

मेहसी प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं–कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मो ं के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2–3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500–600 लीटर पानी मे घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत मे ं एक से0मी0 पानी की उपस्थति रहनी चाहिए।
अरहर		उचॅास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करे। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय–13, राजेन्द्र अरहर–1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशसित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से0मी0 रखें । बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखे ं।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उचॅास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे–भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रुप से कीट–व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों मे गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च–3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0–267 अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150–200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ–23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ–1 अनुषंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ–3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।

आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग–अलग समय में पकने वाली आम की किस्मो ं का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह मे पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह मे ं पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त मे पकने वाली किस्मे ं समरबहिश्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष ंकर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगडा राजेंद्र आम–1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधो ं को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे– कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट ब`दाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे– कसैलिया, लौंगिया, र्स्वणरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि है ं। उपजाऊ मिट्टी मे ं 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़` 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़कने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रुप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

9473000861

head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र

पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)

डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(27जुलाई -31जुलाई, 2019)

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी — दिनांक 26.07.2019

मोतिहारी, प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं–कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मो ं के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2–3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500–600 लीटर पानी मे घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत मे ं एक से0मी0 पानी की उपस्थति रहनी चाहिए।
अरहर		उचॉस जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करे। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय–13, राजेन्द्र अरहर–1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशसित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से0मी0 रखें । बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखे ं।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे–भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रुप से कीट–व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों मे गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च–3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0–267 अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व

		थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150–200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ–23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ–1 अनुषंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ–3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग–अलग समय में पकने वाली आम की किस्मो ं का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह मे पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह मे ं पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त मे पकने वाली किस्मे ं समरबहिश्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष ंकर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगडा राजेंद्र आम–1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधो ं को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे– कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट ब`दाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे– कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि है ं। उपजाऊ मिट्टी मे ं 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़` 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़कने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रुप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान	नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9473000861	***9368411887***
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in	gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(27 जुलाई -31जुलाई, 2019)

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी दिनांक 26.07.2019

पताही प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं–कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मो ं के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2–3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500–600 लीटर पानी मे घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत मे ं एक से0मी0 पानी की उपस्थति रहनी चाहिए।
अरहर		उचॅास जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करे। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय–13, राजेन्द्र अरहर–1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशसित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से0मी0 रखें । बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखे ं।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या

		इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर / 2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उचॅास जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे–भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रुप से कीट–व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों मे गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च–3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0–267 अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150–200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ–23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैंडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ–1 अनुषंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ–3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग–अलग समय में पकने वाली आम की किस्मो ं का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह मे पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह मे ं पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त मे पकने वाली किस्मे ं समरबहिश्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष ंकर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगडा़ राजेंद्र आम–1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधो ं को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे– कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट ब ेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे– कसैलिया, लौंगिया, र्स्वणरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि है ं। उपजाऊ मिट्टी मे ं 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़ े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़कने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रुप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयाार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(27 जुलाई -31 जुलाई, 2019)

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी　　　　दिनांक 26 .07.2019

रक्सौल प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं–कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मघ्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मो के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2–3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या

		पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500–600 लीटर पानी मे घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत मे ं एक से0मी0 पानी की उपस्थति रहनी चाहिए।
अरहर		उचॉस जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करे। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय–13, राजेन्द्र अरहर–1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशसित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से0मी0 रखें । बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखे ं।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे–भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रुप से कीट–व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों मे गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च–3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0–267 अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150–200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ–23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ–1 अनुषंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ–3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग–अलग समय में पकने वाली आम की किस्मो ं का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह मे पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफाँन्जों, जड़दालू, जून माह मे ं पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त मे पकने वाली किस्मे ं समरबहिश्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष ंकर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगडा़ राजेंद्र आम–1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधो ं को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे– कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट ब`दाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे– कसैलिया, लौंगिया, स्र्वणरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि है ं। उपजाऊ मिट्टी मे ं 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़` 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़कने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रुप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयाार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों

परिरक्षण		को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(27 जुलाई -31 जुलाई, 2019)

रेफरेंस 14/AAS/ पिपराकोठी दिनांक 26.07.2019

संग्रामपुर, प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह

धान		मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं–कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मो ं के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2–3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500–600 लीटर पानी मे घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत मे ं एक से0मी0 पानी की उपस्थति रहनी चाहिए।
अरहर		उचॉस जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करे। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय–13, राजेन्द्र अरहर–1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशसित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से0मी0 रखें । बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखे ं।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे–भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रुप से कीट–व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों मे गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च–3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0–267 अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150–200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ–23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैंडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ–1 अनुषंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ–3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग–अलग समय में पकने वाली आम की किस्मो ं का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह मे पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह मे ं पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त मे पकने वाली किस्मे ं समरबहिश्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष ंकर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम–1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधो ं को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे– कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट ब`दाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे– कसैलिया, लौंगिया, र्स्वणरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि है ं। उपजाऊ मिट्टी मे ं 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़` 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर–पतवार निकालें।

		पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़कने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रुप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

9473000861

head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(27जुलाई -31 जुलाई, 2019)

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी　　　　　　　　　　दिनांक 26.07.2019

सुगौली प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं–कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मो ं के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2–3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500–600 लीटर पानी मे घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत मे ं एक से0मी0 पानी की उपस्थति रहनी चाहिए।
अरहर		उचॉस जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करे। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय–13, राजेन्द्र अरहर–1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशसित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से0मी0 रखें । बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखे ं।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे–भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रुप से कीट–व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों मे गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च–3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0–267 अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150–200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ–23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ–1 अनुषंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ–3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग–अलग समय में पकने वाली आम की किस्मो ं का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह मे पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह मे ं पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त मे पकने वाली किस्मे

		समरबहिश्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष कर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम–1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधो को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे– कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट बेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे– कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि है। उपजाऊ मिट्टी मे 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़कने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रुप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गोशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(27जुलाई -31 जुलाई, 2019)

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी दिनांक 26.07.2019

तेतरिया प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं–कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मो ं के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2–3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500–600 लीटर पानी मे घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत मे ं एक से0मी0 पानी की उपस्थति रहनी चाहिए।
अरहर		उचॉस जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करे। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय–13, राजेन्द्र अरहर–1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशसित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से0मी0 रखें । बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखे ं।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे–भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रुप से कीट–व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों मे गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च–3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0–267 अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150–200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।

केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ–23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ–1 अनुषंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ–3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग–अलग समय में पकने वाली आम की किस्मो ं का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह मे पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह मे ं पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त मे पकने वाली किस्मे ं समरबहिश्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष ंकर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम–1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधो ं को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे– कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट ब`दाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे– कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि है ं। उपजाऊ मिट्टी मे ं 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़` 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़कने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रुप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(27जुलाई -31जुलाई, 2019)

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी दिनांक 26.07.2019

तुरकौलिया प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं–कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मो ं के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2–3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500–600 लीटर पानी मे घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत मे ं एक से0मी0 पानी की उपस्थति रहनी चाहिए।
अरहर		उचॉस जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करे। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय–13, राजेन्द्र अरहर–1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशसित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से0मी0 रखें । बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखे ं।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या

		इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे–भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रुप से कीट–व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों मे गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च–3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0–267 अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150–200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रुप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ–23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैंडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ–1 अनुषंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ–3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग–अलग समय में पकने वाली आम की किस्मो ं का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह मे पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह मे ं पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त मे पकने वाली किस्मे ं समरबहिश्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष ंकर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगडा़ राजेंद्र आम–1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधो ं को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे– कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट ब ेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे– कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि है ं। उपजाऊ मिट्टी मे ं 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़ े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़कने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रुप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयाार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(27जुलाई -31जुलाई, 2019)

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी   दिनांक 26.07.2019

पकड़ीदयाल प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं–कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मघ्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मो के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2–3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या

		पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500–600 लीटर पानी मे घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत मे ं एक से0मी0 पानी की उपस्थति रहनी चाहिए।
अरहर		उचॉस जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करे। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय–13, राजेन्द्र अरहर–1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशसित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से0मी0 रखें । बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखे ं।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे–भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रुप से कीट–व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों मे गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च–3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0–267 अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150–200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ–23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैंडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ–1 अनुषंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ–3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग–अलग समय में पकने वाली आम की किस्मो ं का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह मे पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफाँन्जों, जड़दालू, जून माह मे ं पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त मे पकने वाली किस्मे ं समरबहिश्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष ंकर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम–1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधो ं को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे– कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट ब`दाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे– कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि है ं। उपजाऊ मिट्टी मे ं 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़` 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़कने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रुप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयाार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों

परिरक्षण		को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(27जुलाई -31 जुलाई, 2019)

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी — दिनांक 26.07.2019

रामगढ़वा प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह

धान		मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं–कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मो ं के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2–3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500–600 लीटर पानी मे घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत मे ं एक से0मी0 पानी की उपस्थति रहनी चाहिए।
टरहर		उचॉस जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करे। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय–13, राजेन्द्र अरहर–1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशसित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से0मी0 रखें । बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखे ं।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे–भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रुप से कीट–व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों मे गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च–3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0–267 अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150–200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ–23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ–1 अनुषंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ–3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
टाम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग–अलग समय में पकने वाली आम की किस्मो ं का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह मे पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह मे ं पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त मे पकने वाली किस्मे ं समरबहिश्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष ंकर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगडा़ राजेंद्र आम–1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधो ं को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे– कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट ब ेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे– कसैलिया, लौंगिया, र्स्वणरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि है ं। उपजाऊ मिट्टी मे ं 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़ े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर–पतवार निकालें।

		पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़कने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रुप से निगरानी करते रहें।
चरा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

9473000861

head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र

पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)

डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(27जुलाई -31 जुलाई, 2019)

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 26.07.2019

घोड़ासन प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं–कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मो ं के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2–3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500–600 लीटर पानी मे घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत मे ं एक से0मी0 पानी की उपस्थति रहनी चाहिए।
अरहर		उचॉस जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करे। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय–13, राजेन्द्र अरहर–1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशसित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से0मी0 रखें । बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखे ं।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे–भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रुप से कीट–व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों मे गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च–3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0–267 अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150–200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ–23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ–1 अनुषंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ–3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग–अलग समय में पकने वाली आम की किस्मो ं का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह मे पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह मे ं पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त मे पकने वाली किस्मे

		समरबहिश्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष कर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम–1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधो को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे– कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट बेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे– कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि है। उपजाऊ मिट्टी में 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़कने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रुप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गोशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(27जुलाई -31 जुलाई, 2019)

रेफरेस 14/AAS/ पिपराकोठी — दिनांक 26.07.2019

हरसिद्धि प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 27 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 10 से 15 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के चतुर्थ सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		मौसम पूर्वानुमान की अवधि में कहीं–कहीं हल्की बर्षा की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वो नीची तथा मध्यम जमीन में धान की रोपनी 30 जुलाई से पहले संपन्न कर लें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मो ं के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2–3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500–600 लीटर पानी मे घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत मे ं एक से0मी0 पानी की उपस्थति रहनी चाहिए।
अरहर		उचॉस जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो फॉस्फोरस एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का प्रयोग करे। बहार, पूसा 9, नरेंद्र अरहर 1, मालवीय–13, राजेन्द्र अरहर–1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशसित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से0मी0 रखें । बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखे ं।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियों जैसे–भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई अविलम्ब संपन्न करें। गरमा सब्जियों में नियमित रुप से कीट–व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों मे गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च–3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0–267 अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
प्याज		खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150–200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
केला		केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ–23 तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा,

		बसराई, फिआ–1 अनुषंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ–3 तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी 2.0 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग–अलग समय में पकने वाली आम की किस्मो ं का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह मे पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफाँन्जों, जड़दालू, जून माह मे ं पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त मे पकने वाली किस्मे ं समरबहिश्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष ंकर, आम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगडा़ राजेंद्र आम–1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधो ं को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे– कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट ब`दाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे– कसैलिया, लौंगिया, र्स्वणरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि है ं। उपजाऊ मिट्टी मे ं 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़` 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़कने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रुप से निगरानी करते रहें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफाँस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गोशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान	**नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)**
9473000861	***9368411887***
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in	gkmseastchamparan@gmail.com